Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AFMA–114

M.A. (Final) Examination, 2023

RAJASTHANI

Paper - IV (a)

(विशिष्ट साहित्यकार : ईसरदास)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

नोट :– सगळा सवालां रा उत्तर राजस्थानी में ई देवणा है।

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सगळा **दस** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरेक सवाल वास्तै **50** सबद अर 2 अंक राखीज्या है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात मांय सूं किणी **पांच** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्तै **200** सबद अर **8** अंक राखीज्या है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार मांय सूं कोई **दो** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्तै **500** सबद अर **20** अंक राखीज्या है।

खण्ड–अ

1. नीचै लिख्योड़ा सवालां रा पडूत्तर देवो :

   (i) ईसरदास जी रै जनम रो बगत कांई हो ? बरस अर काल लिखो।

   (ii) ईसरदास जी जनम भोम रो नाम उणारै पिता रै नाम साथै लिखो।

(iii) ईसरदास रै गुजरात जावण रो कारण लिखो, वे किणरै साथै गया ?

(iv) किसी रचना में कवि भगवान री निंदा करतां थकां वाने याद करे ?

(v) देवियांण रचना रो खासकारण कांई हो ? इणमें किणरो वरणन है ?

(vi) ''देवी सिन्धु गोदावरी मही संगा, देवी गोमती धम्मला बाण-गंगा।'' में कवि देवी रै वास्तै कांई कैवणी चावै ?

(vii) ''देवी वेद रै रूप तूं ब्रह्म वाणी'' रो अरथ लिखो।

(viii) आखर ईसरियाह, तो मुख नीसरिया थका।

स्वाति सो स्वियाह, सीपां माथै सूखत॥

किण कवि रो कह्योड़ो है ? इणरो अरथ लिखो।

(ix) ''हिया म छंडे हरि भगति, रसणा म छंडे रांम।'' में कवि कांई कैवणी चावै।

(x) ''भर बथ्थां अथ काढिये, मंदिर जळते मांय।'' में मूळ भाव काई है ? लिखो।

खण्ड-ब

नोट :- नीचै लिख्योड़ा सवालां सूं किणी **पाँच** रा पड़ूत्तर देवो। पद्यांसां री प्रसंग सेती व्याख्या करो :

2. किता तें बार लिया किरसन्न,

रिणायर रोळिया चवदै रतन्न।

मथै तें बार किता महरांण

सुरां ले दीध अम्रत सुजांण॥

3. दळै तें केता वार दईत,

इन्द्रासण दीधो सक्र अजीत।

हणे नखवार किता हरणक्ख,

भवानिय भैरव दीधा भक्ख॥

4. पुकारत संत सुणे प्रतपाळ,

दौड़े उठ आतुर दीन-दयाळ।

राखैं ते बार किता गजराज,

महाबळि ग्राह हण्यो महाराज॥

5. चरण पवित्र करिस इम चत्रभुज,

त्रिगुण नाथ नाचै आगळ तुझ।

इन्द्रिय पवित्र करिस अपरंभ्रम,

दमे ग्यान तूझ दइतां दम॥

6. उदर पवित्र करिस अपरंपर,

चरणाम्रत तूझ धरी चक्रधर।

पावन ह्रिदो करिस पुरुषोतम,

संचै नांम तूझ श्री संगम॥

7. मरदां मरणो हक्क है, ऊबरसी गल्लाहं।

सा पुरसां रा जीवणा, थोड़ा ही भल्लांह॥

वैरी आया पावणा दळ थंभ तूझ दुवारि।

दळ थंम तुझ दुवारि झुंझारि धवळ तणा

घणां विरदां लहण आविया अरि घणा

घणा नींदाळवां नींद वारो घणी

तूंग नहं छै भली हींस घोड़ां तणी॥

8. ओ अवसर नहीं आवसै,

ईसर आखै ऐह।

पुण रे हरिरस प्राणिया,

जनम सफल कर जेह॥

खण्ड–स

नोट :– नीचै लिख्योड़ा सवालां मांय सूं कोई **दो** रा पड़ूत्तर देवो :

9. ईसरदास रै जीवण चरित्र माथै सांतरो आखेल लिखो।

10. ईसरदास री रचना 'हरिरस' रै आधार माथै कवि रै काव्य सौष्ठव अर कुसलता रो वरणन करो।

11. 'ईसरा सो परमेसरा' काव्य उक्ति माथै कवि री भगती साधना री विरोळ करो।

12. ईसरदास जी री रचना 'देवियांण' री विसेसतावां रो दाखलां समेत वरणन करो।